P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-4* ISSUE-7* October- 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

फ्यूजन और सृजनशीलता

सारांश

फ्यूजन में सृजन प्रक्रिया से लेकर अभिव्यक्ति तक यह भी आवश्यक है कि सभी संबन्धित लोगों का सांगीतिक अन्तर्मन और सांगीतिक परिवेश स्वस्थ और अनुकूल रहे। जब भी एक श्रेष्ठ फ्यूजन का सृजन और अभिव्यक्ति होता है तो अनुभूति का सौन्दर्य और अभिव्यक्ति का सौन्दर्य एकाकार हो जाता है और कुशल कलाकार, वादक अपनी सृजनात्मक कल्पना से ही पूर्व रचित गीत को एक नया रूप और रंग दे देते हैं और कई बार अभिव्यक्ति के कौशल के अभाव में रचना इतनी प्रभावी नहीं लगती।

मुख्य शब्द : फ्यूजन, सृजनशीलता, अभिव्यक्ति, कल्पना, पुनराभिव्यक्ति।

आलाप देवड़ा
शोधार्थी,
संगीत विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर, राजस्थान, भारत

प्रस्तावना

कला का मूर्त रूप सृजनात्मक, कलात्मक अभिव्यक्ति है। अभिव्यक्ति का रूप मूलतः रचना के प्रयोजन पर निर्भर करता है और इसीलिए संगीत की विभिन्न विधाओं के अभिव्यक्त रूप की भिन्नता इसी प्रयोजन पर आश्रित है। जब प्रयोजन और अभिव्यक्ति भिन्न हो जाती है तब सृजन प्रक्रिया में भी अंतर आता है। अतः संगीत के साध्य रूप और साधन रूप की सृजन प्रक्रिया में भी अंतर आना स्वाभाविक है। परंतु किसी भी कलात्मक सृजन का मूलाधार हमेशा कल्पना रहती है। पूर्व अनुभवों एवं संवेदनाओं के बिम्ब मस्तिष्क में एकत्रित रहते हैं स्मृति द्वारा वो सजीव हो जाते हैं और कल्पना द्वारा मस्तिष्क में इन बिम्बों को एक नया रूप मिलता है। इस प्रकार पुनराभिव्यक्ति कल्पना और सृजनात्मक कल्पना द्वारा एक व्यवस्थित मानसिक सृजन हो जाता है और इसी क्रम में मानसिक रचना एक कलात्मक अभिव्यक्ति का रूप लेती है। पहले सूक्षम अनुभूति का मानसिक रूप सृजित होता है, तत्पश्चात् स्थूल अभिव्यक्ति का रूप सृजित होता है। इस प्रकार पूर्व अनुभव एवं अभ्यास, अभिव्यक्ति की तीव्र इच्छाशक्ति, कला कौशल, कला ज्ञान, अभिव्यक्ति से जुड़ी तकनीक का पूर्ण ज्ञान और अभ्यास, आदि सृजन प्रक्रिया में मूल घटकों के रूप में क्रियाशील होते है। इस प्रकार कलात्मक अभिव्यक्ति अव्यक्त को व्यक्त करते हुये अमूर्त को मूर्त रूप देती है। सूक्ष्म अनुभूति से अभिव्यक्ति के मूर्त रूप तक की यात्रा ही सृजन प्रक्रिया है। इस अभिव्यक्ति के मूर्त रूप को कुछ विद्वान कलाकृति, कुछ कला और कुछ सृजनात्मक कलात्मक अभिव्यक्ति के नाम से संबोधित करते हैं। संज्ञा कोई भी दी जाये सभी का सार समान है। संगीत के संदर्भ में यह प्रक्रिया क्या रूप लेती है इस पर विचार करना आवश्यक है। संगीत की विविध विधाएं है और बाहरी प्रयोजनहीनता या विशिष्ट प्रयोजन आश्रित कलाओं के संदर्भ में सृजन क्रिया भी अपना एक विशिष्ट रूप बनाती है। संगीत रचनात्मकता की कुंजी है एवं परिवर्तनशील है। सृजन के कारण ही पांच, छः, सात स्वरों वाले राग को और तीन चार पंक्ति वाले किसी गीत को संगीतकार अपनी सृजनात्मकता का स्पर्श देते हुए नित नूतनता प्रदान करता है।[1]

हिंदुस्तानी संगीत के क्षेत्र में 'फ्यूजन संगीत' नामक यह नवीनतम प्रयोगात्मक प्रकार वर्तमान काल में अत्यधिक प्रचलित हो चुका है। कई सुप्रसिद्ध संगीतज्ञों की सहमति और कुछ संगीतज्ञों की असहमति के बावजूद भी यह संगीत प्रकार बहुत प्रसिद्धि व प्रोत्साहन पा रहा है।

संगीत के इतिहास का अगर हम अध्ययन करें तो यह स्पष्ट होता है कि दुनिया का हर संगीतकार अपने संगीत में कुछ विविधता या नयापन लाने का प्रयास करता है। परम्परा, सृजनात्मकता और नव्यता ही हमारे संगीत की जीवन्तता का राज है।[2]

प्रसिद्व मनोवैज्ञानिक जेम्स ड्रेवर ने मनोविज्ञान शब्दकोश में कहा हैं कि सृजन शब्द को आवश्यक नई वस्तु के बनाने, रचनात्मक कल्पना जहाँ विचारों या कल्पना के नये–नये रूप बनाए जाए इस रूप में परिभाषित किया है।[3]

अलग–अलग प्रान्तों के व अलग–अलग देशों के संगीत प्रकारों को जिन्होने भी सुना है उन्होने अपनी पसंद के अनुसार दो या दो से अधिक संगीत

विधाओं को मिलाकर नए संगीत प्रकार प्रस्तुत किए हैं। उनमें से कई संगीत प्रकार काल प्रवाह में लुप्त हो गए। कई प्रकार थोड़े समय तक प्रचलित रहे और कई संगीत प्रकारों ने स्थिरता प्राप्त की और भविष्य के मुख्य संगीत प्रकार बन गए। इसी काल–क्रम की वजह से यह दिखाई देता है कि संगीत कि शैली और सभ्यता समय के अनुसार बदलती रही है। अगर हम इतिहास में इस बदलाव कि नजर से झांक कर देखें तो हमें यह पता चलता है कि सामान्यतः कहीं भी संगीत का नया प्रकार ज्यादातर लोकप्रिय नहीं रहा, समाज ने उसे खुले–दिल से स्वीकारा नहीं। अपनी अलग छटा बनाने के लिए किसी भी नए संगीत प्रकार को समय लगता है।

सी. श्योर ने भी कल्पना में सृजनात्मक शक्ति के महत्व को स्पष्ट किया है। रचनात्मक कार्य में कल्पना आवश्यक रूप से होगी, इसलिए इन्होंने कल्पना को रचनात्मक व सृजनात्मक शक्ति को द्योतक बताया है।[4]

संगीत लयात्मक ध्वनियों का कलात्मक एवं वैज्ञानिक संयोजन है।संगीत संसार का और जीवन का एक अभिन्न अंग है। जीवन विकासशील है और फ्यूजन भी इस विकास का एक अंग है। सृष्टि की यही सृजनात्मक शक्ति एक कलाकार को प्रेरणा देती है, जिससे कि कलाकार अपने सीखे हुए संगीत में विविधता और नयापन लाने के लिए प्रेरित होता है।

हर्बटरीड ने कहा है कि: Art is nothing but the good Making of Something- It may be sound or thing or image or Anything.[5]

अच्छे कलाकारों में सृजनशीलता होती है जो प्रयोगशील रहती है और नए का स्वागत करने के लिए तत्पर रहती है। इसी स्रोत के कारण नए आविष्कारों का प्रयोग होता है। उनमें जो अच्छे होते हैं, वे पहचान बना लेते हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

इस विषय का उद्देश्य यही है कि फ्यूजन संगीत के सन्दर्भ में सृजनशीलता का क्या महत्त्व है। सृजन और अभिव्यक्ति के सम्बन्ध को इस लेख में समझाने का प्रयास किया है।

निष्कर्ष

सृजन प्रक्रिया की मानसिक पृष्ठभूमि में, कल्पना और अभिव्यक्ति पक्ष में उस रचना की प्रस्तुति ऐसा रूप लेती है, जिसमें प्रस्तुति साकार हो जाती है। प्रत्येक स्वर और संगति व्यक्त करते हैं और मुखड़े का स्वरूप और सम की स्थिति उस रचना के प्राण हैं जो पुनरावृत्ति में भी नवीनता पैदा करने की क्षमता रखते हैं। इसी प्रकार फ्यूजन संगीत में भी यदि शास्त्रीय फ्यूजन फिर चाहे वो गायन हो या वादन इस सृजन के पीछे राग का ज्ञान, राग प्रस्तुति में दक्षता, अपूर्व कल्पना, बुद्धि कौशल, आंतरिक कल्पना और बाह्य स्वरूप देने की क्षमता के साथ यह कलात्मक निर्णय लेना भी आना चाहिए कि मुखड़े से सम का कलात्मक संबंध कैसे उभरेगा, कैसे प्रत्येक वाद्य एक दूसरे से कड़ी के रूप में जुड़ता जाएगा, स्वर का स्वर से अंतरसंबंध, स्वर विन्यास कहाँ रागानुरूप है और किस जगह किस वाद्य कि संगति श्रेष्ठ रहेगी या वाद्यों की जुगलबंदी हो, तिहाई का उचित स्थान है, ताकि फ्यूजन में सौन्दर्य ही नहीं बल्कि अपूर्व अखंडता रहती है। छोटे छोटे अंश आवश्यक भी हैं और सुंदर भी, ऐसा फ्यूजन जो पूर्णाकार के रूप में श्रोता को प्रभावित कर सके, जहाँ कोई अति न हो और न कोई कमी, कभी संतुलित, सुंदर और कलात्मक हो।

सुझाव

जहाँ मौलिकता और कल्पना का अभाव रहता हैं , वहां ऐसा फ्यूजन संगीत सुनने को मिलता है जो केवल नकल और जोड़–तोड़ का परिणाम है। ऐसा संगीत अपने उद्देश्य को प्राप्त नहीं कर पता है और परिणाम स्वरूप फ्यूजन पर भी प्रश्नचिन्ह लगा देता है। कई स्थापित रचनाएँ जिन्हें विभिन्न संगीतकारों ने अपनी–अपनी कल्पना से उसी रचना में फ्यूजन प्रस्तुत करते हैं। अतः किसी भी श्रेष्ठ फ्यूजन के लिए सृजनात्मक प्रवृति होना अति आवश्यक है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. *संगीत कला विहार अप्रैल 2017 पं. विजय शंकर मिश्र, पृ. 7*
2. *संगीत कला विहार जनवरी 2017*
3. *डॉ. निशि माथुर 'भारतीय संगीत व कलाकार' पृष्ठ संख्या 18*
4. *डॉ. निशि माथुर 'भारतीय संगीत व कलाकार' पृष्ठ संख्या 18*
5. *डॉ. निशि माथुर 'भारतीय संगीत व कलाकार' पृ. 19*